

(5) रसपाक एवं पाचनक्रिया में परिवर्तन (Changes in metabolism and digestive or gastro-intestinal functions):-

शंवेग की अवस्था में पाचन-संस्वान से संबंधित अवयवों की क्रियाओं में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन पाये जाते हैं। उदाहरण के लिए, क्रोध और भय की अवस्था में आरग्रंथि द्वारा लार का उपकना बंद हो जाता है, जिससे मुँह सूखने लगता है। लेकिन, प्रेम की अवस्था में लार का स्राव बढ़ जाता है।

केनन ने अपने प्रयोग में पाया कि शंवेग की अवस्था में आमाशय-आंत्रगति (gastro-intestinal mobility) धर जाती है तथा आमाशय-रस (gastric juice) का निकलना भी बंद हो जाता है।

(6) एवक-प्रतिक्रियाओं तथा मानस तरंगों में परिवर्तन (Changes in psychogalvanic responses and brain waves)-

प्रयोगों द्वारा पाया गया है कि शंवेग की अवस्था में सामान्य अवस्था की अपेक्षा लवक प्रतिक्रिया एवं मानस तरंगों में भी काफी परिवर्तन होते हैं। इन परिवर्तनों को साइकोगैलवानोमीटर (psychogalvanometer) यंत्र से मापा जाता है। इस यंत्र द्वारा लवका-विद्युत-प्रवाह के चालन की क्षमता का अध्ययन किया जाता है।

इसी प्रकार इ.इ.जी० (E.E.G.)

आलेखों द्वारा शंवेग की अवस्था में मस्तिष्क तरंगों (Brain waves) में भी परिवर्तन के लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं। ऐसे परिवर्तनों में मस्तिष्कीय विद्युत्प्रवाह के चक्र एवं उंचाई (cycle and amplitude) में परिवर्तन देखे जाते हैं।

(7) ग्रंथियों अथवा पिंडों की क्रियाओं में परिवर्तन (Changes in the activities of the glands):- शंवेग की अवस्था में शरीर के अन्दर स्थित विभिन्न प्रकार के ग्रंथियों, जैसे - एड्रिनल ग्रंथि (adrenal gland), लार ग्रंथि (salivary gland), अश्रु ग्रंथि (tear gland) इत्यादि की प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण परिवर्तन होते हैं। एड्रिनल ग्रंथि आमाशय में स्थित एक छोटी ग्रंथि है।

जिनका संबंध हमारे जीवन स्था-संबंधी कार्यों से है।
 संवेग की अवस्था में एड्रिनल ग्रंथि की क्रिया तेज हो जाती है-
 जिससे लीवर उत्तेजित होकर चीनी अधिक मात्रा में छोड़ता है।
 संवेग की अवस्था में लाइग्रंथि, अश्रुग्रंथि,
 तथा स्वेदग्रंथि की क्रियाओं में भी परिवर्तन होता है।

⑧ अन्यान्य परिवर्तन (Other changes) -

संवेग की अवस्था में उपर्युक्त परिवर्तनों के अतिरिक्त कुछ अन्य प्रकार के भी परिवर्तन होते हैं; मांसपेशियों में तनाव का बढ़ना (increase in the muscle tension), पसक मारना, आँकों को घुमाव आदि। मांसपेशियों में तनाव को एलेक्ट्रोमायोग्राफ (electromyograph) नामक यंत्र से मापा जा सकता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि संवेग की अवस्था में अनेक प्रकार के आन्तरीक शारीरिक परिवर्तन होते हैं, किंतु इन परिवर्तनों के संबंध में दो बातों का स्मरण रखना अनिवार्य है:-

(क) प्रायः एक ही प्रकार के आन्तरीक शारीरिक परिवर्तन विभिन्न संवेगों में पाये जाते हैं।

(ख) प्रत्येक संवेग में सदा एक ही तरह के परिवर्तन की भ्रंखला नहीं पायी जाती।

अतः हम केवल शारीरिक परिवर्तनों के आधार पर यह निश्चित रूप से नहीं कह सकते कि ये परिवर्तन किस प्रकार के संवेग की ओर इंगित करते हैं। अर्थात्, किस संवेगात्मक अनुभव का संबंध किस प्रकार के शारीरिक परिवर्तन के साथ है - ऐसा कहना अब तक संभव नहीं है, जब तक उस अनुभव को उत्पन्न करनेवाली परिस्थिति का पूर्ण ज्ञान न हो।

अतः संक्षेप में हम अभी कह सकते हैं कि संवेगों का अनुभव अध्धन करने हेतु संवेग के दोनों पक्षों - संवेग उत्पन्न करनेवाली परिस्थिति एवं उससे उत्पन्न संवेगात्मक अनुभव तथा शारीरिक परिवर्तन अववा व्यवहार - का ज्ञान होना जरूरी है।

नियका संबंध हमारे जीवन तथा संबंधी कार्यों से है।
 संवेग की अवस्था में एड्रिनल ग्रंथि की क्रिया तेज हो जाती है-
 जिससे लीवर उत्तेजित होकर चीनी अधिक मात्रा में छोड़ता है।
 संवेग की अवस्था में लार ग्रंथि, अश्रु ग्रंथि,
 तथा स्वेद ग्रंथि की क्रियाओं में भी परिवर्तन होता है।

⑧ अन्यान्य परिवर्तन (Other changes) -

संवेग की अवस्था में उपर्युक्त
 परिवर्तनों के अतिरिक्त कुछ अन्य प्रकार के भी परिवर्तन होते
 हैं; मांसपेशियों में तनाव का बढ़ना (increase in the muscle
 tension), पसक मारना, आँसुओं को धुंसावना आदि। मांसपेशियों में
 तनाव को एलेक्ट्रोमायोग्राफ (electromyograph) नामक यंत्र
 से मापा जा सकता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि संवेग की अवस्था
 में अनेक प्रकार के आन्तरिक शारीरिक परिवर्तन होते हैं, किंतु
 इन परिवर्तनों के संबंध में दो बातों का स्मरण रखना
 अनिवार्य है:-

(क) प्रायः एक ही प्रकार के आन्तरिक शारीरिक परिवर्तन विभिन्न
 संवेगों में पाये जाते हैं।

(ख) प्रत्येक संवेग में सदा एक ही तरह के परिवर्तन की
 शृंखला नहीं पायी जाती।

अतः हम केवल शारीरिक परिवर्तनों के
 आधार पर यह निश्चित रूप से नहीं कह सकते कि ये
 परिवर्तन किस प्रकार के संवेग की ओर इंगित करते हैं।
 अर्थात्, किस संवेगात्मक अनुभव का संबंध किस प्रकार के
 शारीरिक परिवर्तन के साथ है - ऐसा कहना अब तक संभव
 नहीं है, जब तक उस अनुभव को उत्पन्न करनेवाली परिस्थिति
 का पूर्ण ज्ञान न हो।

अतः संक्षेप में हम अभी कह सकते हैं कि
 संवेगों का अनुभव अध्धन करने हेतु संवेग के दोनों पक्षों -
 संवेग उत्पन्न करनेवाली परिस्थिति एवं उससे उत्पन्न
 संवेगात्मक अनुभव तथा शारीरिक परिवर्तन अववा व्यवहार -
 का ज्ञान होना जरूरी है।

